PUBLICATION NAME :	**Amrit**
EDITION :	**Lucknow**
DATE :	**04/09/2022**
PAGE:	**05**

पहल

भारतीय उद्यमशीलता विकास संस्थान ने कई कंपनियों से किया करार

10 हजार महिला हरित उद्यम खड़ा करेगा ईडीआईआई

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय उद्यमशीलता विकास संस्थान (ईडीआईआई) ने अगले 1,000 दिनों में देश के 100 जिलों में महिलाओं की अगुआई वाले 10,000 हरित कारोबार खड़ा करने के लिए कंपनियों के साथ करार करने की घोषणा की।

सरकार की तरफ से एक उत्कृष्टता केंद्र के रूप में मान्यता-प्राप्त ईडीआईआई विभिन्न मंत्रालयों एवं विभागों के अलावा निजी कंपनियों के साथ मिलकर विकासपरक परियोजनाओं के क्रियान्वयन का काम करता है। ये परियोजनाएं समुदायों की प्रगति के लिए संचालित की जाती हैं।

ईडीआईआई के महानिदेशक सुनील शुक्ला ने कहा कि संस्थान कारीगरों, बुनकरों, महिला स्टार्टअप संस्थापकों और बेरोजगारों को उद्यमशीलता एवं कौशल विकास से जुड़ा प्रशिक्षण देने के काम में जुटा हुआ है ताकि इन्हें टिकाऊ आजीविका विकल्प मुहैया कराए जा सकें। उन्होंने कहा कि ग्रामीण उद्यमशीलता के पास भारतीय अर्थव्यवस्था के 70 प्रतिशत से अधिक हिस्से को सशक्त करने की क्षमता है। इसके लिए सही तरह के लोगों को सही तरह का कौशल देना होगा। इस मौके पर संस्थान के परियोजना

विभाग (कॉरपोरेट) के निदेशक रमन गुजराल ने बाजार में उच्च स्तर के मूल्य-वर्द्धित उत्पादों एवं सेवाओं की बढ़ती जरूरत पर बल दिया, जो पर्यावरण को कम-से-कम नुकसान पहुंचाते हों।

उन्होंने कहा, "हमें ऐसी रणनीतियों पर काम करने की जरूरत है, जो हरित उद्यमों एवं कारोबारों के प्रोत्साहन के अलावा पर्यावरण को बचाने में भी योगदान दें। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में नए नवाचारों के साथ पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को भी अपनाने की जरूरत है।"

स्वास्थ्य बीमा का महंगा होना भी एक वजह

केंद्र के स्तर पर कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय द्वारा महानिदेशक प्रशिक्षण (डीजीटी), राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद (एनएसडीए), नेशनल काउंसिल फॉर वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (एनसीवीईटी), नेशनल स्कील डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (एनएसडीसी), नेशनल स्कील डेवलपमेंट फंड (एनएसडीएफ) की स्थापना की गई है। कौशल विकास कार्यक्रमों को गति देने के लिए 38 अलग-अलग सेक्टर में स्कील काउंसिल भी सक्रिय हैं। इसी तरह देश भर में स्थित 33 स्कील ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट युवाओं को नए क्षेत्रों में कौशल विकास कार्यक्रमों से जोड़ रहे हैं। डीजीटी के अंतर्गत अभी 15 हजार औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान काम रहे हैं।